कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय .... हिंदी

परीक्षा का दिन..........

दिनांक ....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जावेगा।
(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।
(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तक के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 158/2016

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।

   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।

   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये।

   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।

   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ भी न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।

   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - क

1 (अ) 'विचार लो कि मर्त्य हो।'

उपरोक्त पंक्ति का आशय है कि जिसने भी इस संसार में जन्म लिया है उसे किसी न किसी दिन मरना पड़ेगा। मनुष्य नशवर प्राणी है। अतः किसी निश्चय समय बाद उसी की मृत्यु गले लगानी पड़ती है। कोई भी इस संसार में अमर नहीं है। तुलसीदास ने भी कहा है -

'धरा को प्रमान यही तुलसी, जो फरा सो झरा जो बरा सो बुताना।'

(ब) जो व्यक्ति केवल अपने ही बारे में सोचता है तथा जिसे दूसरों की इच्छाओं व भावनाओं से कुछ लेना देना नहीं है। वह पशु के समान है। उसमें मानवता का अभाव है। अतः मानवता के अभाव तथा स्वार्थपूर्ण मनोवृत्ति को ही पशु प्रवृत्ति बताया गया है।

(स) जो मनुष्य संसार के प्रति आत्मीयता का भाव रखता है तथा संसार में अखण्डता व एकता बनाए रखने का संदेश देता है। सृष्टि में उस मनुष्य की कीर्ति होती है तथा उसे अपार यश प्राप्त होता है। अतः मानवता के लिए मरने वाले मनुष्य को ही सम्मान मिलता है।

(द) 'वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे।'

उपरोक्त पंक्ति में मानवता का भाव निहित है। सच्चा मनुष्य तो वही है जो स्वार्थ से दूर रहकर मानवता की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दे।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	7.	
	(अ)	राष्ट्रीय जागरण के लिए देश की युवा पीढ़ी को सचेत कर उसमे जोश व आशा का संचार करना होगा। युवा पीढ़ी मे वह ताकत होती है जो किसी भी देश का भविष्य बदल सकती है। राष्ट्र का आधार युवा होते है तथा उन्हे अनुप्राणित करके ही राष्ट्रीय जागरण किया जा सकता है।
	(ब)	सरल वाक्य – स्वतंत्रता के पश्चात तेजी से आसानी की ओर भागने के कारण हमारी कठिनाईयो मे वृद्धि हुई है।
	(स)	स्वावलम्बी – स्व (उपसर्ग) + अवलंब (मूलशब्द) + ई (प्रत्यय) उपसर्ग = स्व मूलशब्द = अवलंब प्रत्यय = ई
	(द)	शीर्षक – 'राष्ट्रीय जागरण की आवश्यकता'।
		P. T. O.

Scr

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

3. निबंध –

बढ़ती महंगाई : घटता जीवन स्तर

रूपरेखा :–

(i) प्रस्तावना।
(ii) महंगाई का ताण्डव
(iii) महंगाई के कारण
(iv) महंगाई के प्रभाव
(v) निवारण के उपाय
(vi) उपसंहार।

(i) प्रस्तावना :–

मंहगी दाल तेल तरकारी,
दुःखी हो रही घर की नारी।
देखो इस सरकार का खेल,
मंहगा राशन मंहगा तेल।।

आज का समय मंहगाई का है। मुक्त बाजार, भूमण्डलीकरण का दुष्प्रचार, विनिवेश का बुखार, छलांगे मारता है शेयर बाजार, विदेशी निवेश के लिए बैंका पलक-पावडे बिछाती सरकार, उधार माँगने वालों के लिए बैंको के खुले द्वार इतने पर भी गरीब और मध्यम वर्ग पर मँहगाई की मार। विकास की यह कैसी विचित्र अवधारणा है। हमारे करमंत्री (वित्तमंत्री) निरंतर नए करो के जुगाड़ में लगे रहते हैं किंतु मँहगाई रोकने के उनके सारे हाईटेक हथियार कुंद हो रही हैं। परंतु यह मंहगाई तो रुकने का नाम ही नही ले रही है। यह तो सुरसा के बदन की तरह दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है। जिसमें पूरा मध्यम वर्ग परेशान है तथा उसे दो वक्त की रोटी भी नसीब नही हो रही है। अपने साथ यह कई अन्य समस्याएँ भी पैदा कर रही है। जिसने देश को हिलाकर रख दिया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(ii) मंहगाई का तांडव :-

मंहगाई का तांडव आज किसी एक देश तक ही सीमित नही है। यह एक विश्वव्यापी समस्या बन गई है। कवि ने भारत पर मंहगाई के लिए सही ही कहा है कि

"अगर जारी रहा यूं ही हमारे विनाश का,
तो अस्त समझो सूर्य भारत भाग्य के आकाश का।
जो मंहगाई ऐसे ही बढती चली जाएगी,
तो यह स्वर्ग भारत भूमि मरघट महा बन जाएगी।।"

मंहगाई आज ऐसे छलांगे मार रही है जिस प्रकार कंगारू छलांग मारता है। खाने-पीने की चीजे आज इतनी मंहगी हो गई है कि मध्यम वर्ग तो बढ़िया खाने के बारे मे सोच भी नहीं सकता। यहाँ तक की उनका भोजन दाल, प्याज व रोटी भी उनके लिए खरीदना बस की बात नही है। जो दाल 30 रू/किलोग्राम मिलती थी वह 180 रू. तक जा पहुँची है तथा प्याज की कीमते भी आसमान छू रही हैं। प्याज की कीमत इतनी अधिक बढ गई कि प्याज की अच्छी खेती होने के बाद भी भारत को प्याज का आयात करना पड़ता है। खाने-पीने की जो चीजे सस्ती है वे मिलावटी है तथा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। अत: मंहगाई ने तो पूरी तरह अपनी धूम मचा दी है।

(iii) मंहगाई के कारण :-

मंहगाई बढने के कई प्रमुख कारण है। जिनमे से कुछ निम्न है -

(अ) जनसंख्या वृद्धि → मांग की तुलना मे आपूर्ति कम होने से मंहगाई बढती है। आज जनसंख्या मे धड़ल्ले से वृद्धि हो रही है। जिस कारण जनसंख्या की तुलना मे उत्पादन कम होने से मंहगाई भी उसी अनुपात मे बढ रही है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(ब) जमाखोरी व कालाबाजारी →

कुछ बेईमान व लालची लोग अधिक लाभ कमाने के लिए वस्तुओं की कृत्रिम कमी कर देते हैं। इसके लिए वे आवश्यकता की वस्तुओं को जमा करते हैं जिससे आपूर्ति कम होने से मंहगाई बढ़ती है। ये लोग इन वस्तुओं को ब्लैक मार्केट मे उच्च दामों पर बेचकर मुनाफा कमाते हैं।

(स) सरकार की गलत नीतियाँ व भ्रष्टाचार →

सरकार गलत नीतियाँ बनाती है तथा जो नीतियाँ सही होती है उनपर वह चलना नहीं चाहती। जिससे मंहगाई बढ़ती है। खाद्यान्नो का रखरखाव उचित न होने के कारण करोडो टन अनाज बर्बाद हो जाता है। इसके अलावा भ्रष्टाचारी लोग व्यापारियो से रिश्वत लेकर उनकी सहायता करते हैं। जिससे वे गलत धंधो द्वारा मंहगाई बढ़ाते हैं।

इसके अतिरिक्त लोगो मे दिखावे की प्रवृत्ति के कारण अधिक से अधिक खरीदने की चाह, खाद्यान्नो का कम उत्पादन तथा भूमि की उर्वरता मे कमी होना अनेक कारण है जिनसे मंहगाई बढ़ती है।

(iv) मंहगाई के प्रभाव :-

मंहगाई के प्रभाव सर्वव्यापी है। आज इन्सानियत खत्म हो गई है। कवि ने ठीक ही कहा है कि -

काँटो से भरा ये कैसा गुलिस्ताँ है
संदेहो से घिरा हर एक रिश्ता है
मंहगाई के इस दौर मे हर चीज है मंहगी, मगर ताज्जुब
दुनिया के बाजार मे महज आदमी सस्ता है।

मंहगाई ने देश के विकास के रथ को अपनी जकड़ मे पकड़ लिया है यह आज कई अन्य समस्याओ की जननी बनती जा रही है। इसके कारण भ्रष्टाचार मे वृद्धि हो रही है। सरकारी कर्मचारी अपनी

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

सीमित आय से अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ नही खरीद पाते। इसलिए वे गलत तरीके अपनाते है व रिश्वत लेकर पैसा कमाते है। मध्यम वर्ग को खाने के लिए दो वक्त की रोटी नही मिल पाती है जिससे भुखमरी फैलती है तथा वे आत्महत्या करने को भी मजबूर हो जाते है। लघु व कुटीर उद्योग भी महंगाई के इस दौर मे असफल हो रहे हैं।

(V) निवारण के उपाय :-

महंगाई रोकने के लिए सर्वप्रथम देश की जनता को आगे आना होगा। सरदार वल्लभ भाई पटेल ने कहा है कि

ये सच है कि पानी मे तैरने वाले ही डूबते है बाहर खडे
रहकर देखने वाले नही।
किंतु बाहर खडे रहकर देखने वाले कभी तैरना भी
नही सीख पाते है।

अतः आम जनता को सरकार की जनविरोधि नीतियो का विद्रोह करना चाहिए तथा भ्रष्टाचारी नी लोगो का समाज से बहिष्कार करना चाहिए। उन्हे परिवार नियोजन अपनाकर जनसंख्या पर नियंत्रण करना चाहिए। तथा सरकार को भी चाहिए कि वह किसानो को अच्छे खाद-बीज उपलब्ध करवाये जिनसे उत्पादकता बढे। जमाखोरी करने वालो के खिलाफ सख्त कानून बनाने चाहिए। बैंको को भी सस्ती दरो पर अधिक ऋण देने से बचना चाहिए। इससे मुद्रा प्रवाह बढता है तथा महंगाई नियंत्रित होती है।

(Vi) उपसंहार :-

सच तो यह है कि निरंतर प्रयास करने के बाद मे भी महंगाई बढती ही जा रही है। किसी ने सच ही

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

कहा है कि 'मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों ज्यों दवा की आपनो।' यदि इस समस्या का तुरंत निवारण न किया गया तो यह लाइलाज बीमारी बन जायेगी तथा निम्न वर्गों के लोगों को भूखों मरना पड़ेगा। अत: इसके लिए सरकार को समाज के साथ मिलकर कार्य करना चाहिए।

'महंगाई को हमें रूलाना है
देश हमें चलाना है।'

4. प्रतिवेदन —

लाउडस्पीकरो ने छीना जनता का चैन

बीकानेर, 5 फरवरी 2016।

शहर में पिछले कई दिनों से लाउडस्पीकरों ने जनता का सुख-चैन छीन लिया है। दिन-रात इनके शोर से आम लोग परेशान रहने लगे हैं तथा अपने काम में व्यवधान महसूस करते हैं। दिन में उन्हें काम से अवसर नहीं मिलता है तो रात में इनके शोर से उन्हें अच्छी नींद नहीं आ पाती है।

कई दुकानदार अपनी चीजे बेचने के लिए लाउडस्पीकर का प्रयोग करते हैं वही राजनैतिक पार्टियाँ प्रचार-प्रसार के लिए इनका प्रयोग करने में पीछे नहीं है। शादी व त्योहारों का मौसम होने के कारण दिन-रात ऊँची आवाज में संगीत बजते रहते हैं। डी.जे. की आवाज तो कान फाड़ने वाली होती है। यह समय माध्यमिक बोर्ड परीक्षा है जिस कारण विद्यार्थी दिन रात अपनी पढ़ाई में मशगूल रहने का प्रयास करते हैं जिससे कि अच्छे अंक प्राप्त कर सके। किंतु इन ध्वनि विस्तारक यंत्रों के अत्यधिक शोर के कारण न तो वे अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित कर पाते हैं और न ही अच्छी नींद ले पाते हैं। जिससे उन्हें तनाव, आँखों से संबंधित परेशानियाँ भी हो रही हैं। जो कि अत्यंत हानिकारक है व जानलेवा भी हो सकती है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

कुछ लोगो ने तंग आकर जिला कलेक्टर से शिकायत भी की तथा ऐसे लोगो से अनुरोध भी किया। परंतु मंदिर व मस्जिद में प्रयोग होने वाले लाउडस्पीकरो के लिए वे उनसे कुछ बोल भी नही सकते क्योंकि ऐसे मे दंगा फसाद होने की नौबत आ जाती है। उन्होने संबंधित अधिकारियों से अनुरोध किया है कि कम से कम परीक्षा के दिनो मे तो इनके प्रयोग पर पाबंदी लगा दी जाए।

5. राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
चौरू।

प्रेषक –
प्रधानाचार्य,
रा.उ. मा. वि.,
चौरू।

प्रेषित –
निदेशक,
मा. शि. बोर्ड, राजस्थान
बीकानेर।

पत्र क्रमांक – रा.उ.मा.वि./मि-19/5-16 दिनांक – 5 मार्च, 2016।

विषय – व्याख्याता के रिक्त पद भरने हेतु।

उपरोक्त विषयांतर्गत लेख है कि हमारे विद्यालय मे गणित व हिंदी व्याख्याताओं के दो पद रिक्त है। जिस कारण विद्यार्थियों को इन विषयो को पढने में परेशानी आ रही है। उन्हे आगामी परीक्षा मे फेल होने का डर भी सता रहा है।

अतः आपसे आपसे निवेदन है कि आप व्याख्याताओं के इन रिक्त पदो को जल्दी-जल्दी भरे तथा उचित शिक्षको

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

की नियुक्ति करें। जिससे माध्यमिक स्तर का शिक्षण सुचारू रूप से चल सके।
सधन्यवाद।

भवदीप,
प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि., चौला

आलेख -

6. किसानों की समस्याएँ

आज देश का हर किसान मारा-मारा-सा फिर रहा है। वह इतनी समस्याओं के बोझ तले दबा है कि उनको उठा नहीं पा रहा है तथा आत्महत्या का रास्ता अपना रहा है। पिछले दिनों में महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश व राजस्थान आदि जिलों में लगभग 5000 किसानों ने आत्महत्या कर ली।

किसान की समस्याएँ कई हैं पर सुनने वाला कोई नहीं है। उसे बुवाई के लिए सस्ती कीमत पर अच्छे खाद व बीज नहीं मिल पाते, सही समय पर सिंचाई के लिए पानी नहीं मिल पाता, कम जमीन होने के कारण मुआवजा व ऋण भी प्राप्त नहीं मिलता, फसल को प्राकृतिक आपदाओं में गंवाने पर उसका मुआवजा नहीं मिलता और यदि फसल अच्छी हो जाए तो उसका उचित मूल्य नहीं मिल पाता आदि अनेक समस्याएँ हैं जिनसे वह जूझ रहा है। बैंकों से ऋण न मिल पाने के कारण वह साहूकारों की ओर हाथ बढ़ाता है जो उसे ऋण के चंगुल में फंसाकर उसका जीवन बर्बाद कर देते हैं। किसान की आर्थिक हालत ठीक न होने के कारण उसका लोग अपमान करते हैं तथा सुख से जीने नहीं देते। इन सभी समस्याओं के कारण आज कोई भी खेती की ओर नहीं आना चाहता। जो खेती पहले लगभग 85% लोग करते थे वह आज 60% पर आ गई है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अतः सरकार व समाज को अन्नदाता किसान का सम्मान लौटाना चाहिए तथा उसकी समस्याओं का तुरंत निवारण करना चाहिए। यदि किसानों की समस्याओं व आत्महत्याओं का दौर ऐसे ही चलता रहा तो देश में अन्न का संकट आ जाएगा। सभी को किसान के बारे में सोचना चाहिए कि-

उत्तम खेती, मध्यम बान
अधम चाकरी, भीख निदान।

7. फ़ीचर -

दूरदर्शन और अपसंस्कृति

दूरदर्शन तो आज हमारा जीवन व सुख-दुःख का साथी बन गया है। उसपर दिखाये जाने वाले कार्यक्रम हमें इतने आकर्षित करते हैं कि हमें अपने आस-पास का कोई ख्याल भी नहीं रहता। वह मनोरंजन के साथ-साथ हमें कई चीजें भी सौंप रहा है जो नयी पीढ़ी को तो लुभावनी लगती हैं किंतु है देश की बर्बादी।

दूरदर्शन पर अश्लीलता व नग्नता का प्रदर्शन तो आम बात है। सुंदर बदन व लुभाती अदाओं वाली अभिनेत्रियाँ आज की पीढ़ी को अप्सराओं के समान लगती हैं तथा वे उनके कार्य को अपने जीवन में अपनाने लगे हैं। आज हर कार्यक्रम ऐसा है कि परिवार के सभी सदस्य उसे साथ बैठकर नहीं देख ~~सके~~ सकते और यदि देखते हैं तो शर्म से पानी पानी हो जाते हैं। इसपर दिखाए जाने वाले जीवन को आज लोग वास्तविकता मान बैठे हैं। अभिनेताओं के स्टंट देखकर युवा लोग भी वैसा करने का प्रयास करते हैं। वे अपना सारा समय अश्लील फिल्मों को देखने में बर्बाद कर देते हैं। वे कहते हैं कि इसमें इतना मजा मगर क्यों है? इसने युवाओं को पथभ्रष्ट कर दिया है और वे गलत कार्य करने

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर | परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक

लगते हैं जिससे देश को हानि होती है। उनमें मानवता व भारतीय संस्कृति का कोई अवशेष नहीं रह गया है। उन्होंने भारतीय संस्कृति को बदनाम करके रख दिया है।

इस स्थिति को सुधारने के लिए समाज के निचले स्तर पर कार्य करना चाहिए क्योंकि परिवार व विद्यालय के द्वारा ही किसी का चरित्र बनता है। सरकार भी ऐसे कार्यक्रमों पर पाबंदी लगाए जो देश की संस्कृति के खिलाफ हो। यह पंक्ति बिल्कुल सही प्रतीत होती है -

'देखो इस दूरदर्शन का काम
इसने बनाया हमें नाकाम।'

8. खेती न - - - - - - - - - तुलसी हहाकरी।'

(अ) विभिन्न वर्गों के लोग इस कारण दुःखी रहते थे क्योंकि उस समय बेरोजगारी व भुखमरी फैली हुई थी। प्रकृति व शासन की विषमता से उपजी बेकारी के कारण उन्हें भूखों मरने की नौबत आ पड़ी तथा जीविका के अभाव में वे मारे-मारे फिर रहे थे।

(ब) जीविका-विहीन लोग अपना दुःख एक-दूसरे से कहकर व्यक्त करते। वे कहते कि हम कहाँ जाये और क्या करें? क्योंकि उनके पास रोजगार का कोई साधन नहीं था।

(स) तुलसीदास ने गरीबी के की तुलना दशानन अर्थात् रावण से की है। जिस प्रकार रावण ने अपनी शक्ति के बल पर तीनों लोकों पर अधिकार कर लिया था तथा अत्याचारों के कारण आम जनता कराह रही थी उसी प्रकार गरीबी के कारण लोगों की दशा भ बुरी थी और वे दुःख से कराह रहे थे।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(ख) इस काव्यांश में कवि ने प्रकृति तथा शासन की विषमता से उपजी गरीबी व बेकारी का चित्रण हुआ है। कवि ने शासक वर्ग के अत्याचारों व उनसे उपजी भीषण गरीबी पर आक्षेप किया है। कवि कहता है कि रावण रूपी गरीबी ने इस संसार को दुखों के गर्त में धकेल दिया है तथा केवल प्रभु श्रीराम के कृपा जल की वृष्टि से ही इसका निवारण संभव है।

2. 'फ़ितरत — — — — — — — — खो ले है।'

(क) भाव-सौंदर्य:-

उपरोक्त पंक्तियों में शायर फ़िराक गोरखपुरी ने प्यार में त्याग के महत्व को बताया है। शायर के अनुसार सच्चा प्रेमी वही होता है जो त्याग करना जानता है तथा अपने प्रिय के प्रति अपना सर्वस्व अर्पण कर देता है। शायर के अनुसार सच्चा प्रेम कीमती होता है तथा उसकी कीमत चुकानी पड़ती है। यदि हम अपने प्रिय के प्रति समर्पित होकर उससे प्रेम करेंगे तो जितना प्रेम हम अपने प्रिय से करते हैं उतना ही हमें उससे प्राप्त होगा।

कवि दिनकर ने भी त्याग की महिमा बताई है-

त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है, करो प्रेम पर प्राण न्यौछावर।

(ख) शिल्प-सौंदर्य:-

भाषा - क शायर ने उर्दू भाषा का सुंदर प्रयोग करते हुए त्याग की महिमा बतायी है।

- 'खो ले है' के प्रयोग से भाषा की सुंदरता में विलक्षणता उत्पन्न हुई है।
- उपरोक्त गजल में चुटीलापन है व रूमानियत का सुंदर प्रयोग हुआ है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

- उर्दू शब्दों के प्रयोग से काव्य की कठिनता व दुरूहता में वृद्धि हुई है।
- यह फिराक गोरखपुरी की एक गजल है।

10.

(अ) "तितलियों की इतनी नाजुक दुनिया।"
उपरोक्त पंक्ति आसमान में उड़ती हुई रंग-बिरंगी पतंगों के लिए प्रयुक्त हुई है। आसमान में विभिन्न रंगो की पतंगो के उड़ने से रंगो की एक नयी दुनिया बनी है तथा ये उड़ती हुई पतंगे ऐसे प्रतीत होती है जैसे की आकाश में तितली उड़ रही हो।

(स) "स्लेट पर या लाल खड़िया चाक मल दी हो किसी ने।"
उपरोक्त पंक्ति मे कवि ने सूर्योदय से पहले लालिमा युक्त आकाश की सुंदरता को व्यक्त की किया है। उषा के इस झुटपुटे को देखकर कवि को लगता है जैसे किसी ने स्लेट पर लाल खड़िया चाक मल दी हो। क्योंकि उषा के समय आकाश स्लेट की तरह कालिमायुक्त होता है तथा आकाश की लालिमा खड़िया चाक के समान होती है।

11. सेवक धर्म — — — — — — — — हो उठी।

(अ) हनुमान जी श्रीराम के परम भक्त थे तथा उनकी दिन रात सेवा में लगते रहते थे। भक्तिन भी महादेवी का हर समय ख्याल रखती तथा उनकी दिन-रात सेवा मे लगी रहती। वह महादेवी के प्रति समर्पित होकर काम करती। भक्तिन के इसी समर्पण भाव के कारण उसे हनुमान जी से स्पर्द्धा करने वाली बताया गया है।

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(ब) जीवन मे सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है। यह जरूरी नही है कि व्यक्ति का काम उसके नाम के अनुसार होगा। जिस प्रकार लक्ष्मी समृद्धता का सूचक है किंतु भक्तिन (लक्ष्मी) को जीवन मे कोई सुख समृद्धि नहीं मिली।

(स) भक्तिन चाहती थी कि महादेवी उसका समृद्धि सूचक नाम लक्ष्मी कभी प्रयोग न करे। अतः जब महादेवी ने उसके गले में कंठी माला देखकर उसका नाम भक्तिन रखा तो वह गदगद हो उठी क्योंकि वह अपनी स्वामिन के प्रति भक्ति भाव से काम करना चाहती थी तथा वह भगवान की भक्ति-पूजा मे विश्वास रखती थी।

12.
(ब) 'नमक' कहानी की मूल संवेदना मातृभूमि के प्रति प्रेम है। शब्द राज्यों की धर्म के आधार पर सीमा रेखाएँ खींची जा चुकी हैं तथा धर्म के अनुसार लोगों को अलग-अलग शब्दो मे बाँट दिया गया है किंतु यह विभाजन लोगो की हार्दिक इच्छा नही बन पाया है। अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम उन्हें खींचता है। इसी कारण सिख बीबी लाहौर को, पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी दिल्ली को व भारतीय कस्टम अधिकारी सुनीलदास गुप्त ढाका को अपना वतन मानता है तथा उनकी यादो मे खोये रहते है। अतः लेखिका के अनुसार ये राजनैतिक सरहदे बेमानी है।

(स) 'यथा प्रजा तथा राजा।' का अर्थ है कि जिस प्रकार जनता का आचरण होगा, उसी प्रकार की आचरण राजा अर्थात शासक को करने के लिए मजबूर होना

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

पड़ेगा। इस कथन द्वारा लोकतंत्र की ओर संकेत किया गया है। लोकतंत्र मे जनता ही असली शासक होती है।

(द) जाति-प्रथा के कारण लोगो को पूर्व से ही निर्धारित कार्य करना पड़ता है चाहे वह कार्य उन करने मे उनकी रुचि व इच्छा न हो। यह बात लोगो को अनिच्छापूर्वक व टालू काम करने के लिए प्रेरित करते है तथा वे कभी भी अपने काम मे कुशलता नही पा सकते। इस प्रकार जाति-प्रथा के कारण समाज व व्यक्ति को आर्थिक हानि होती है।

13.
(अ) "सिल्वर वैडिंग" कहानी के माध्यम से लेखक ने समयानुसार अपने स्वभाव मे परिवर्तन करने का संदेश दिया है। लेखक के अनुसार हमे समय के परिवर्तनो को स्वीकार करते हुए उसके अनुसार अपने को ढालना चाहिए। लेखक ने वर्तमान पीढ़ी के पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण व घटती मानवीय संवेदना पर प्रहार करते हुए अपनी संस्कृति व मानवता को बनाए रखने का संदेश भी दिया है।

(ब) 'जूझ' उपन्यास एक बालक के देखे व भोगे हुए गँवई जीवन के खुरदरे यथार्थ का चित्रण है। हमे लेखक की तरह हर हाल मे अपनी मंजिल पाने की लगन होनी चाहिए। हर हाल मे पढ़ने की ललक के कारण ही लेखक जीवन मे सफलता प्राप्त कर पाता है। हमे चुनौतियो से घबराकर संघर्ष नही छोड़ना चाहिए। यही इस कहानी की मूल संवेदना है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

14.
(अ) ऐन फ्रैंक प्रकृति प्रेमी है। प्रकृति का हर दृश्य उसे अपनी ओर आकर्षित करता है। प्रकृति हमें विनम्रता का उपहार देती है व हममें आशा का संचार करती है। प्रकृति अमीर-गरीब में कोई भेदभाव नहीं करती है तथा प्रकृति शांति प्राप्ति की रामबाण दवा है। इसलिए ऐन ने कहा है कि प्रकृति का कोई सानी नहीं है।

(ब) सिंधु घाटी सभ्यता को तर सभ्यता कहने के निम्न कारण हैं-

(i) इस सभ्यता में लगभग अकेले मुअनजो-दड़ो शहर में लगभग 700 कुएँ मिले हैं।
(ii) यहाँ के लोग रबी की अच्छी फसल उगाते थे।
(iii) यहाँ के सिक्कों पर हाथी, शेर, गैंडे को स्थान चिह्न है जो पानी वाले इलाकों में पाये जाते हैं।
(iv) यहाँ पानी निकास व स्नानघरों की उत्तम व्यवस्था है।
(v) यहाँ के घरों के आगे छज्जे नहीं हैं। इसका मतलब है यहाँ गर्मी नहीं पड़ती थी।

15
(अ) " कई बार कोई रहस्यमयी ताकत हम दोनों को पीछे की तरफ खींचती है।"
ऐन फ्रैंक ने इस कथन के द्वारा पीटर की ओर संकेत किया है। वह मानती है कि पीटर उसे प्रेम करता है लेकिन दोस्त की तरह, गर्लफ्रेंड की तरह नहीं। वह पीटर को अपने आस-पास ही देखना चाहती है।

…क द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

परंतु पीटर के खाने व धर्म के प्रति विचारों ने उसे निराश किया है। परंतु फिर भी पीटर उसे कई बातें कर लेने देता है जिनकी इजाजत वह अपनी माँ को भी नहीं देता। यद्यपि पीटर ऐन को घुन्ना लगता है किंतु यदि वह कुछ दिन उसको न देखे तो उसके लिए तड़पने लगती है।

इस प्रकार पीटर को चाहते हुए ऐन उसके करीब आना चाहती है किंतु पीटर व उसके विचारों में भिन्नता होने के कारण कोई रहस्यमयी ताकत उन्हें पीछे खींचती हुई प्रतीत होती है।

समाप्त